

## करणलक्षण

डा० धनञ्जय वासुदेव द्विवेदी

सहायक प्रोफेसर,

संस्कृतविभाग,

डा० श्यामा प्रसाद मुखर्जी विश्वविद्यालय, राँची

तर्कभाषाकार ने पाणिनीय व्याकरण के सदृश ही करण का लक्षण किया है-

साधकतमं करणम्। अतिशयितं साधकं साधकतमं प्रकृष्टं कारणमित्यर्थः।

साधकतम को करण कहते हैं। अतिशय साधक अर्थात् सर्वोत्कृष्ट कारण साधकतम होने के कारण करण कहलाता है।

कहने का तात्पर्य यह है कि क्रिया की सिद्धि में जो प्रकृष्टोपकारक हो उसे करण कहते हैं।

यहाँ ध्यातव्य है कि करण के लक्षण में 'साधकतमम्' इतना अंश 'लक्षण' है और 'करणम्' यह अंश लक्ष्य है। 'साधक' पद का अर्थ है कारण। 'साधकतमम्' में 'तमप्' प्रत्यय का योग है जो अतिशय अर्थ में प्रयुक्त होता है।

तर्कभाषाकार ने 'करण' को प्रकृष्ट कारण कहा है। वस्तुतः एक कार्य के होने में अनेक कारणों की अपेक्षा होती है। उन कारणों में से कुछ तो 'साधारण' कारण और कुछ 'असाधारण' कारण हुआ करते हैं। जिन कारणों की अपेक्षा सभी कार्यों में होती है, उन्हें साधारण कारण कहते हैं। ऐसे साधारण कारण-ईश्वर, ईश्वर का ज्ञान, ईश्वर की इच्छा, ईश्वर का प्रयत्न, अदृष्ट, कार्य का प्रागभाव, दिक् और काल-आठ हैं। ये आठों कार्यमात्र के प्रति कारण माने गए हैं। इन आठ कारणों से भिन्न जितने भी कारण होंगे, उन्हें 'असाधारण कारण' कहते हैं। जैसे- कुलाल, कपाल, चक्र, चीवर, दण्ड, सलिल (पानी) ये सब घट (कार्य) के प्रति असाधारण कारण रहते हैं।

असाधारण कारणों में से जो प्रकृष्ट (अतिशययुक्त) कारण हो, उसे करण कहा जाता है। इस अतिशय प्रकर्ष को ही व्यापार कहते हैं। अत एव अन्य नैयायिकों ने 'करण' का लक्षण-"व्यापारवत् असाधारणं कारणं करणम्" किया है। अर्थात् व्यापार द्वारा जो जिस कार्य का असाधारण कारण हो, वही

E-Learning material prepared by Dr. Dhananjay Vasudeo Dwivedi, Assistant Professor,  
Department of Sanskrit, Dr. Shyama Prasad Mukherjee University, Ranchi

उस कार्य का करण बनता है। जैसे-कपालद्वयसंयोगरूपव्यापार के द्वारा दण्ड, चक्र, चीवरादि, घट के करण हो सकते हैं। इसी तरह तन्तुसंयोगरूपव्यापार के द्वारा तुरी, वेमा, तन्तु, आदि पट के करण हो सकते हैं।

यहाँ यह ध्यातव्य है कि करण के होने पर कार्य की उत्पत्ति हो ही जाया करती है। इसीलिए करण का स्वरूप बतलाते हुए यह भी कहा गया है कि करण वह कारण है जिसके होने पर फल की अप्राप्ति नहीं रहती। इसी प्रकार यह भी कहा जा सकता है कि जिसके होने पर द्वितीय या तृतीय क्षण में फल का अभाव नहीं रहता वह करण है।